

नर्मदा बेसिन के कृषि भूमि-उपयोग में हुए बदलावों का एक स्थानिक अध्ययन

डॉ. रामकरण सिंह अहिरवार*

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का प्रमुख अंग है, क्योंकि भूमि और उसका उपयोग दोनों ही अनेक तत्वों के माध्यम से एक दूसरे से अन्तर्संबंधित होते हैं। भूमि पर मानव द्वारा विभिन्न क्रियाकलाप किये जाते हैं तथा मानव भूमिका उपयोग अपने विभिन्न प्रयोजना के आधार पर अनेकों रूप में करता है। भूमि पर सदियों से उपयोग मानव अपनी मूलभूत आवश्यकता रोटी कपड़ा और मकान की पूर्ती करने में करता है। चाहे वह उपयोग जनसंख्या बसाव में हो, वृद्ध उद्योगों में हो, कृषि करने में हो अथवा यातायात के मांगों के रूप में हो।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि एक प्रयोजन के उद्देश्य से भूमि का किसी रूप में उपयोग ही भूमि उपयोग कहा जाता है।

नर्मदा बेसिन के वर्तमान कृषि भूमि उपयोग एवं इसमें हुए बदलावों का भौगोलिक दृष्टि से विशद गहन अध्ययन किया है। नर्मदा बेसिन एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहां पर विकास की वृद्ध संभावनाओं के उपरान्त भी संसाधनों का उचित उपयोग नहीं हो सका है। नर्मदा बेसिन में बनी निर्मित और निर्माणधीन विभिन्न बहुउद्देशीय परियोजनाएँ इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

नर्मदा बेसिन में भूमि-उपयोग प्रतिरूप एवं परिवर्तन

(1970-2009-10) (क्षेत्रफल हैक्टेयर में)

क्र	आधार वर्ष 1970		वर्तमान वर्ष 2009-10		परिवर्तन प्रतिशत में
	भूमि-उपयोग की श्रेणिया	प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से (1970)	क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से (2009-10)	
1.	वन	19.58	2071640	18.7	0.88
2.	कृषि के लिए अप्राप्त क्षेत्र	11.6	1497125	14.15	+ 2.55
3.	परती के अतिरिक्त अन्य	15.4	1235789	11.68	3-72
4.	परती क्षेत्र	4.9	1074967	10.16	+ 5.26
5.	खाली व बोया गया क्षेत्र	49.4	4700868	44.43	4.26
	कुल योग	100	10580389	100	
6.	सिंचित क्षेत्र	2.2 प्रतिशत	1165345	24.79 प्रतिशत	

स्रोत 2009-10 आयुक्त भू-अभिलेख एवं वंदोवत मोती महल ग्वालियर (म.प्र.) स्रोत 2009-10 जिला सांख्यकीय पुस्तिका नंदूरवार जिना (महाराष्ट्र) भरुच बड़ोदरा तथा नर्मदा जिला (गुजरात)

* चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नानकोत्तर महाविद्यालय।

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

भूमि-उपयोग में हुए बदलावों की विस्तृत व्याख्या

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में कुछ वन क्षेत्र 19.58 प्रतिशत था जो वर्तमान 2009-10 में घटकर 18.7 प्रतिशत हो गया अर्थात् इसमें 0.88 प्रतिशत की कमी हुई जो नगण्य है क्योंकि यह प्रतिशत सरदार सरोवर बाँध की ऊँचाई बढ़ने के कारण जग-मग हुई भूमि के कारण वन भूमि में कमी हुई है।

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि 11.6 प्रतिशत थी जो वर्तमान 2009-10 में बढ़कर 14.15 प्रतिशत हो गई, अर्थात् इसमें 2.55 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वृद्धि का प्रमुख कारण अधिवास क्षेत्र, जलाशय, तालाब, सड़के, रेलमार्ग खलियान शमशान घाट/कर्चिस्तान आदि में वृद्धि हुई है।

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में परती के अतिरिक्त अन्य अकृषिगत भूमि 15.4 प्रतिशत थी जो वर्तमान में घटकर 11.68 प्रतिशत रह गई अर्थात् इसमें 3.72 प्रतिशत की कमी हुई। कमी का प्रमुख कारण चारागाहों बाग-बगीचे पेड़ों के झुण्ड आदि में कमी हुई है।

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में परती भूमि 4.9 प्रतिशत थी जो वर्तमान 2009-10 में बढ़ कर 10.16 प्रतिशत हो चुकी है। अर्थात् इसमें 5.26 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

परती भूमि में वृद्धि का कारण नहरों से हुई जलक्रांतता, रासायनिक खादों का अधिक मात्रा में प्रयोग, नदियों का मार्ग परिवर्तन, कानूनी विवाद आदि है।

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में खाजिस बोया गया क्षेत्र 49.4 प्रतिशत था जो वर्तमान में घटकर 44.43 प्रतिशत रह गया। अर्थात् इसमें 4.97 प्रतिशत की कमी हुई। कमी का प्रमुख कारण सरदार सरोवर परियोजना बनने से कृषि भूमि का जलमग्न होना और परती भूमि में परिवर्तन होना।

नर्मदा बेसिन में आधार वर्ष 1970 में सिंचित क्षेत्र खाजिस बोया गया क्षेत्र का मात्र 2.2 प्रतिशत था, जो वर्तमान 2009-10 में बढ़कर 24.79 प्रतिशत हो गया। अर्थात् इसमें 22.59 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सिंचित क्षेत्र में वृद्धि का प्रमुख कारण नर्मदा बेसिन में नई निर्मित और निर्माणधीन कई बहुउद्देशीय परियोजनाएँ हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. स्रोत- आयुक्त भू-अभिलेख एवं वैदोवात ग्वालियर म.प्र., 2009-10.
- [2]. स्रोत- म.प्र. का सांख्यिकीय संक्षेप (2009-10) आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय, म.प्र.
- [3]. नर्मदा बेसिन में बनी विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं से प्रभावित डूबन क्षेत्र का एक स्थानिक अध्ययन।